डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

शोक संदेश

अभिमन्यु अनत एक बहुसर्जक हिंदी विद्वान और कथाकार थे। मॉरीशस द्वीप के एक छोटे से नगर त्रिओले में 1937 में जन्मे अभिमन्यु अनत केवल मॉरीशस के हिंदी साहित्यकार के रूप में ही नहीं बल्कि हिंदी साहित्य–संसार के व्यापक जगत में भी शीर्षस्थ साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित थे। चार दशकों के लंबे रचनाकाल में आपने कवि, कथाकार, उपन्यासकार, जीवनी–लेखक, चित्रकार, नाटककार, अभिनेता और निर्देशक आदि की भूमिकाएँ भी निभाईं। उनकी प्रकाशित कृतियों में तीस उपन्यास, सात कहानी–सग्रह, पाँच नाटक, चार कविता–संग्रह, आत्मकथा और बड़ी संख्या में अन्य साहित्यिक कृतियाँ शामिल हैं। उनके इतने विपुल कृतित्व को देखकर यह अनायास ही कहा जा सकता है कि वे साहित्य के एक युग सरीखे थे। इसलिए उन्हें 'मॉरीशस का प्रेमचंद' भी कहा जाता था। यह उनके लेखन का ही प्रभाव था कि हिंदी साहित्य आलोचना में सागर पार या प्रवासी साहित्य या लेखकों की उपेक्षा नहीं की जा सकी।

उनकी कृतियों की विस्तृत व्याप्ति उनको अनूठा साबित करती थी। उनके लेखन में मॉरीशस के जीवन और संस्कृति के अतीत, वर्तमान और भविष्य का चित्रण तो था ही, वहाँ के श्रमिकों की दुर्दशा, दमन और शोषण के चित्रण के साथ ही प्रेम जीवन और सहजता के रंग भी हैं। उनको साहित्यिक सेवाओं के लिए अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें प्रमुख हैं – राजीव गाँधी स्मारक पुरस्कार (1997), जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार (2000), साहित्य भूषण पुरस्कार (2003), कुंभ साहित्य पुरस्कार (2004), शमशेर पुरस्कार (2009), साहित्य महोपाध्याय और महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय पुरस्कार आदि। उनको लखनऊ सिटीजन संस्था, जयपुर विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रेस कम्यूनिटी ऑफ बनारस, के.के. बिरला फाउंडेशन, हिंदी अकादमी, हिंदुस्तानी प्रचार सभा आदि अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया गया।

26 अगस्त 2014 को साहित्य अकादेमी ने विदेशी विद्वानों अथवा लेखकों को दी जाने वाली अपनी मानद महत्तर सदस्यता से अभिमन्यु अनत को सम्मानित किया था। वे अपनी सोच और संवेदना के अनूठेपन के साथ ही अपनी अभिव्यक्ति की विस्मयवादी शक्ति, सहज भाषा और अपने लोगों तथा मानवता के कल्याण के प्रति चिंतित और सचेत लेखक थे।

साहित्य अकादेमी परिवार अभिमन्यु अनत के निधन से मर्माहत है और दिवंगत आत्मा की शांति की कामना करता है।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in